

आपका बंटी और बालमनोविज्ञान

डॉ० सुनीता शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग सेंट्रल जॉन्स कॉलेज, आगरा

स्वातन्त्रोत्तर लेखिकाओं में मन्नू भंडारी ने हिन्दी कथा साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उन्होंने अनेक कहानियों और उपन्यासों की रचना की है। और इनमें अपनी कथाओं के माध्यम से उन्होंने जीवन के गर्भ का अभिव्यक्त किया है। जहाँ एक ओर पति-पत्नी के बीच आपसी सूझ-बूझ और प्रेम बच्चे के सर्वांगीण विकास का आधार बनता है, वहीं दूसरी ओर उनके बीच का दृन्द और तनाव बच्चे के लिए सत्रांस, पीड़ा और अभाव का कारण बन जाता है। बच्चों की चेतना में बड़ों के इस संसार को मन्नू भंडारी ने पहली बार पहचाना था। हम कभी-कभी भूलवश यह सोच बैठते हैं कि बड़ों के बीच जो घटित होता है, उसका बच्चों पर असर नहीं होता है, लेकिन बच्चों पर इसका गहरा असर पड़ता है, जो जीवन भर उनके दिलों-दिमाग पर रहता है। बाल-मनोविज्ञान पर आधारित यह उपन्यास भविष्य में आने वाली अत्यन्त गम्भीर समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है, जिसके लिए हमें आज से ही सजग होना होगा।

‘आपका’ बंटी उपन्यास बाल मनोविज्ञान पर आधारित बहुचर्चित और कालजयी उपन्यास है। अब प्रश्न उठता है कि बाल-मनोविज्ञान है क्या ?

“बाल-मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो बच्चों की शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन गर्भधान से लेकर परिपक्वता तक विकासात्मक दृष्टिकोण से करता है। बाल मनोविज्ञान केवल सामान्य बच्चों का ही अध्ययन नहीं करता अपितु असामान्य बच्चों के असंतुलित व्यवहार का भी अध्ययन करता है। बाल-मनोविज्ञान के द्वारा ही हम यह जान सकते हैं कि बच्चों का व्यक्तित्व विकास सामाजिक विकास, सर्वंगात्मक विकास इत्यादि समुचित ढंग से कैसे हो सकता है।”

यह उपन्यास हिन्दी साहित्य की एक मूल्यवान उपलब्धि के रूप में देखा जाता है। इस उपन्यास की खासियत है कि यह एक बच्चे की निगाहों से घायल होती संवेदना का धार्मिक चित्रण किया गया है, जिसमें मध्यमवर्गीय परिवार में पति-पत्नी के संबंध-विच्छेद की स्थिति एक बच्चे की दुनिया का यथावत दुःस्वप्न बन जाती है। कहना मुश्किल है कि यह कहानी बालक बंटी की है या माँ शकुन की। सभी तो एक दूसरे से ऐसे उलझे हैं कि त्रासदी सभी की यातना बन जाती है। बाल-मनोविज्ञान की विभिन्न धारणाओं से ग्रसित बंटी की मनोदशा का पता इस उपन्यास से चलता है। बंटी अपनी सारी प्रतिक्रियाएँ इन्हीं धारणाओं से व्यक्त करता है, जैसे-तनाव, मनोग्रस्तता, बाध्यता, क्रोध एवं आक्रामकता, कुंठा, दुविधा, अकेलापन और अवसाद। बंटी उपन्यास का केन्द्रिय चरित्र है। उपन्यास की कथावस्तु बंटी के इर्द-गिर्द रहती है। इसमें यह दर्शाया गया है कि बड़ों की दुनिया को एक बच्चे की दृष्टि से देखना कैसा होता है। मन्नू भंडारी ने यह उपन्यास वर्षों पूर्व लिखा था लेकिन आज भी यह उपन्यास अपने आस-पास घटित घटनाओं के साथ अनुभव किया जा सकता है। चाहे वह स्त्री-विमर्श हो या फिर बाल-मनोविज्ञान। इस उपन्यास में वर्णित अकेलापन एक मात्र बंटी का नहीं है, ऐसे हजारों बंटी हमारे आस-पास ही हैं ऐसे। बंटी जो माता-पिता के होने के बावजूद अनाथ की भाँति जीवन-यापन करता है। सम्पूर्ण घटनाक्रम उसी को केन्द्र में रखकर समायोजित हुआ है। बंटी बहुत ही संवेदनशील बालक है, वह अपनी सर्वेदनशीलता के कारण अंतर्जगत में जीवन-यापन करता है। उसके अंतर्मन में एक ही स्वप्न चलता रहता है कि उसके मम्मी-पापा एक साथ घर में रहे, लड़ाई-झगड़ा न करे। किन्तु

ऐसा नहीं हो पाता और दोनों का तलाक हो जाता है। उसका यह स्वप्न अंत तक पूरा नहीं होता। मम्मी इसके इसी स्वप्न की पूर्ति के लिए डॉ० जोशी से दूसरा विवाह करती है। तब भी उसके जीवन में पापा की कमी बनी रहती है। बंटी को डॉ० जोशी का घर पसंद नहीं आता, क्योंकि वहाँ डॉ० जोशी के दो बच्चे और हैं। अब उसकी मम्मी का प्यार तीन हिस्सों में बँट जाने से उसे बहुत दुख होता है और उसका मन विद्रोह और प्रतिशोध की भावना से भर जाता है। जिज्ञासु स्वभाव का बंटी एक पढ़े-लिखे सरकारी दंपति की संतान है। इसलिए साधारण बच्चों की भाँति वह किसी बात को सरलता से भूलता नहीं है बल्कि उसकी तह तक पहुँचने का प्रयास करता है। वह जानना चाहता कि मम्मी उस पापा की बात क्यों नहीं बताती, मम्मी-पापा की लड़ाई क्यों हुई? वे इतने बड़े लोग लड़ते झगड़ते क्यों हैं, और इस लड़ाई में दोस्ती क्यों नहीं हो सकती। इसलिए वह वकील चाचा की बातों को छिपकर सुनता है। वह चाचा के कथन “जब धूरी गड़बड़ा जाती है तो जिन्दगी लड़खड़ाने लगती है” का विश्लेषण कर लेना चाहता है लेकिन आशय समझ न आने पर वह टीटू से समझने के लिए सोचता है परन्तु अपने सहज ज्ञान के आधार पर यह बात मालूम है कि घर की बात बाहर नहीं जानी चाहिए। इसलिए वह अपने मम्मी-पापा या घर से सम्बंधित कोई बात न किसी से कहता है न करता है। मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास से फ्राइड एडलर तथा युंग के मनो-वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर बंटी के अंतर्द्वंद्व और उसकी कुंठाओं का अत्यन्त ही मनो-वैज्ञानिक आंकलन किया है। बंटी की पारिवारिक स्थिति अच्छी न होने और माता-पिता का सम्बन्ध-विच्छेद होने के कारण उसके व्यवहार में असामान्यता की स्थिति आ गई है। अहं की भावना प्रबल होने के कारण वह सब पर एकाधिकार प्राप्त करना चाहता है, चाहे वह खिलौना हो या माता-पिता। मम्मी को डॉ० जोशी के साथ अनैतिक रूप में देखकर वह अपराधबोध से भर उठता है और सोचता है कि मम्मी डॉ० जोशी के साथ इतना सटकर क्यों बैठी है, ऐसे तो वह किसी के साथ नहीं बैठती। साथ ही मम्मी की एक पल की उपेक्षा सहन नहीं कर पता। इससे वह महसूस करता है कि उसे उसके अधिकार से वंचित कर दिया गया है। इसी कारण डॉ० जोशी और मीरा के प्रति ईर्ष्या भाव जाग्रत हो जाता है। उसे लगता है कि इन्हीं के कारण मम्मी-पापा अलग हो गये। डॉ० साहब की डिस्पेन्सरी में लगे सन्तान नियोजन बोर्ड के आधार पर वह यह निष्कर्ष निकालता है कि वह भी इस घर में फालतू और तीसरा बच्चा है। उसके दिमाग में सदैव यही गूँजता रहता है “तीसरा बच्चा फालतू बच्चा” तीसरा बंटी फालतू बंटी। दूसरे को दुःख देकर आत्म-संतुष्टि पर पीड़न कहलाता है तो स्वयं को कष्ट देकर सुख का आभास आत्म-पीड़न है। बंटी भी पेड़ पर चढ़कर घर का सामान ईधर-उधर फेंककर तथा डॉ० जोशी का पापा न कहकर, शकुन को भयभीत और परेशान करके आत्म-संतुष्टि का प्रयास करता है। मम्मी द्वारा अलग सुला दिये जाने पर उसे दुःख और क्षोभ होता है जो धीरे-धीरे भय में बदल जाता है, फलस्वरूप वह रात में बिस्तर पर ही सो-सू करने जैसी असामान्य क्रिया कर बैठता है। यह सब वह अपने मन में छिपे प्रतिशोध के कारण करता है और अपनी मम्मी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उल्टी-सीधी हरकतें करता है। मम्मी उसकी हरकतों से तंग आकर उसे उसके पापा के पास भेज देती है। वहाँ भी वह मीरा को मम्मी के रूप में स्वीकार नहीं करता है। और ना ही पापा का अपनापन उसे मिलता है, पापा भी उसे हॉस्टल भेजकर अपने दायित्व का निर्वाह कर देते हैं। सम्बेदनशीलता के कारण उत्पन्न संकोच, बंटी को हमेशा अन्दर ही अन्दर मथता

रहता, आन्दोलित करता है, लेकिन वह कुछ कह नहीं पाता। इस प्रकार हॉस्टल के गलियारे में अपने विघटित घर पर अश्रुपात करने के लिए मजबूर हो जाता है। बंटी के हॉस्टल पहुँचने पर उपन्यास का अन्त यह द्योतित करता है कि ऐसी सन्तान के लिए अब हॉस्टल ही एकमात्र आश्रय स्थल है। मन्नू भण्डारी अपने इस उपन्यास के माध्यम से भविष्य में आने वाली अत्यन्त गम्भीर

समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, कि अपने व्यक्तित्व महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए या आपसी मत-भेद के कारण जब पति-पत्नी अलग हो जाते हैं तो इससे केवल दो पक्ष ही प्रभावित नहीं होते बल्कि तीसरा पक्ष सर्वाधिक प्रभावित होता है वह है उन दोनों का बच्चा। किसी भी दंपति के जीवन में बच्चों के भविष्य से बढ़कर किसी भी चीज को प्राथमिकता नहीं देना चाहिए। अगर बच्चे को जन्म दिया है तो उसका उचित ढंग से पालन-पोषण करना माता-पिता दोनों का फर्ज है। यह उपन्यास एक नई बात, नई विचारधारा, नई भाषा एवं नए भाव-बोध के साथ हिन्दी का प्रथम सशक्त उपन्यास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची—

1. भंडारी, मन्नु — आपका बन्टी, नई दिल्ली: राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा० लि०।
2. राजकिशोर — आज के प्रश्न बच्चे और हम,
3. सिन्हा, प्रसाद माहेश्वरी — विकासात्मक एवं समाज मनोविज्ञान, पटना: भारत भवन।